अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता २०२० हेतु चयनित गीत

अणुव्रत की अलख

रचनाकार - मुख्यमुनि मुनिश्री महावीर कुमार जी

अणुव्रत की अलख जगा, धरती को स्वर्ग बनाएंगे।
भारत के गौरव को हम शिखर चढ़ाएंगे।।।

मैत्री, अहिंसा के दीप जलाएं, क्षमा धर्म अपना सच्ची वीरता दिखाएं।
आत्मतुल्य सारे प्राणी कभी ना सताएं, मानस का कण-कण करुणामय बन जाए।
मुख-मुख पर मुखरित हो अब 'वसुधैव कुटुम्बकम्' वसुधा पर विश्वशांति का शंख बजाएंगे।।१।।
अणुव्रत की अलख .....

सम्प्रदाय, वर्ण, जाति भले भिन्न-भिन्न हैं, मानवता के आगे सब भेद छिन्न-भिन्न हैं।
वैर भाव रखकर क्यों नर बने खेद खिन्न है? आपस में हिल मिल करके रहना प्रसन्न है।
जागृत कर जन-जन मन में सद्भावों की चेतना, नफरत की दीवारों को तोड़ गिराएंगे।।२।।
अणुव्रत की अलख .....

सज्जनों की संगति कर गुणों को वरेंगे, दुर्गुण, दुर्वृत्तियों से दूर रहेंगे।
मद्यपान, जुआ, चोरी कभी ना करेंगे, सच्चाई की रक्षा हित सब कुछ सहेंगे।
संयम की, सद्गुण की, सत्संस्कारों की सौरभ से, महकेंगे खुद औरों को भी महकाएंगे।।३।।
अणुव्रत की अलख .....

ज्ञान के विकास खातिर खूब पढ़ेंगे, सदाचार साथ रखकर आगे बढ़ेंगे।
उद्यम से उन्नति की हम चोटी चढ़ेंगे, भावी के भाल पर शुभ भाग्य मढ़ेंगे।
सुधरेगा व्यक्ति, समाज, राष्ट्र स्वयं सुधरेंगे, तुलसी की वाणी को सच कर दिखलाएंगे।।।४।।
अणुव्रत की अलख .....

लय - आओ जी आओ म्हारे हिरदे रा पावणा ...